05

बड़े भाई साहब

लेखक –'प्रेमचंद'

रचनाकार का परिचयः लेखक का जन्म 31 जुलाई 1880 मैं बनारस के करीब लमही गांव में जन्म हुआ। उनका मुख्य नाम धनपत राय था पर उर्दू में नवाब राय और हिंदी में प्रेमचंद नाम से लेखन कार्य किया। परंतु अपना निजी व्यवहार और पत्राचार धनपत राय नाम से ही करते रहे। उनकी सबसे पहली उर्दू में प्रकाशित कहानी 'सोजे वतन' अंग्रेजी सरकार ने जब्त कर ली थी। प्रेमचंद ने अपनी आजीविका के लिए स्कूल मास्टरी, इंस्पेक्टरी, मैनेजरी किया। उन्होंने 'हंस', 'माधुरी' जैसी प्रमुख पत्रिकाओं को लिखा। उन्होंने मुंबई की फिल्म नगरी में भी कुछ समय के लिए काम किया है।

उन्होंने प्रमुख उपन्यास लिखी हैं—: गोदान, गबन, प्रेमाश्रम, सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि, काया. कल्प, प्रतिज्ञा और मंगलसूत्र (अधूरी)। जितनी भी कहानियाँ प्रेमचंद ने लिखी है वह सभी मानसरोवर शीर्षक से आठ खंडों में संकलित हैं।

अधिगम प्रतिफलः

- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- पाठ्य पुस्तक में प्रयुक्त शब्दों मुहावरों लोकोक्तियों को समझते हुए सराहना करते हैं। अपने लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात प्रभावी तरीके से लिखते हैं।

पाठ का परिचय – 'बड़े भाई साहब' कहानी प्रेमचंद द्वारा रचित है। प्रेमचंद की कहानियाँ हमेशा शिक्षाप्रद रही हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से किसी–न–किसी समस्या पर प्रहार किया है। 'बड़े भाई साहब' कहानी के माध्यम से लेखक यह बताना चाहता है कि पढ़ाई आनंद पूर्वक करना चाहिए ना कि बोझ समझ कर। शिक्षा की वर्तमान तक प्रणाली की कमियों को उजागर करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि समझ केवल किताबी ज्ञान से नहीं आती बल्कि इसके लिए जीवन का अनुभव भी जरूरी है इसके साथ ही साथ समाज में समाप्त हो रहे, कर्तव्यों के अहसास को दुबारा जीवित करने का प्रयास है। यह कहानी सीख देती है कि मनुष्य उम्र से नहीं, अपने किए गए कामों और कर्तव्यों से बड़ा होता है। वर्तमान युग में मनुष्य विकास तो कर रहा है परन्तु आदर्शों को भूलता जा रहा है। भौतिक सुख एकत्र करने की होड़ में हम अपने आदर्शों को छोड़ चुके हैं। हमारे लिए आज भौतिक सुख ही सब कुछ है। अपने से छोटे और बड़ों के प्रति हमारी जिम्मेदारियाँ हमारे लिए आवश्यक नहीं है। प्रेमचंद ने इन्हीं कर्तव्यों के महत्व को रेखांकित किया है।

© JCERT not to be republished

सार–संक्षेप

लेखक 9 वर्ष का था और उसका बड़ा भाई 14 वर्ष का। बड़ा भाई 2 साल फेल हो चुके थे। इसलिए वह लेखक से केवल तीन कक्षा आगे थे। लेखक हमेशा अपने भाई को किताबें खोलकर बैठा देखा करता था परंतु भाई साहब का दिमाग कहीं और होता था। वह अपनी कॉपी और किताबों पर चिड़िया कबूतर आदि बनाया करते थे। लेखक का मन पढ़ाई में बहुत कम लगता था इसलिए वह मौका पाते ही हॉस्टल से निकलकर खेलने लगता था। परंतु घर पहुंचते ही उसे बड़े भाई का रूद्र रूप देखना पड़ता था। उसके सामने लेखक मौन धारण कर लेता था। वार्षिक परीक्षा हुई तब बड़े भाई साहब फिर से फेल हो गए और लेखक अपनी कक्षा में प्रथम आया। लेखक के मन में आया कि वह बड़े भाई को खूब सुनाएं लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। बड़े भाई का फेल होना देखकर वह निडर हो गया और मैदान में जाकर खेलने लगा। भाई साहब ने कहा कि "मैं देख रहा हूं कि कक्षा में प्रथम आने पर तुम्हें घमंड हो गया है मेरे फेल होने पर ना जाओ मेरी कक्षा में पहुंचेंगे तो पता चलेगा।" अगले साल बड़े भाई साहब फिर से फेल हो गए, जबकि लेखक दर्जे में प्रथम आया। इस साल बड़े भाई ने खूब मेहनत की फिर भी वह फेल हो गए। यह देखकर लेखक को बड़े भाई साहब पर दया आने लगी अब सिर्फ एक ही कक्षा का अंतर दोनों में रह गया था। भाई साहब ने कहा मैं तुमसे 5 साल बड़ा हूँ। तुम मेरे तजुर्बे की बराबरी नहीं कर सकते। तुम चाहे कितनी पढ़ाई क्यों ना कर लो समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती है। हमारे दादा और अम्मा कोई अधिक पढ़े लिखे नहीं हैं। फिर भी हम पढ़े–लिखे को समझाने का हक उनका है। लेखक को बड़े भाई की यह नई युक्ति बहुत अच्छी लगी वह उसके सामने झुक गया। उसे सचमुच अनुभव हुआ और वह कहता है कि आपको कहने का पूरा अधिकार है बड़े भाई साहब। फिर दोनों गले लग जाते हैं।

इस कहानी में बड़े भाई साहब अपने कर्तव्यों को संभालते हुए, अपने भाई के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा कर रहे हैं। उनकी उम्र इतनी नहीं है, जितनी उनकी जिम्मेदारियाँ है। लेकिन उनकी जिम्मेदारियाँ उनकी उम्र के आगे छोटी नजर आती हैं। वह स्वयं के बचपन को, छोटे भाई के लिए तिलाजंलि देते हुए भी नहीं हिचकिचाते हैं। उन्हें इस बात का अहसास है कि उनके गलत कदम छोटे भाई के भविष्य को बिगाड़ सकते हैं। एक चौदह साल के बच्चे द्वारा उठाया गया कदम छोटे भाई के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखता है। यही आदर्श बड़े भाई साहब को छोटे भाई के सामने और भी ऊँचा बना देता हैं।

गद्यांश की व्याख्या–1

मेरे भाई साहब मुझ से 5 साल बड़े थे लेकिन तीन दर्जे आगे–––––––––––उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुंह बड़ी बात थी (पृष्ठ संख्या 27–28)

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ –

दर्जा – कक्षा, श्रेणी

तालीम – शिक्षा

बुनियाद – नींव, आधार

आलीशान – भव्य, विशाल

तनम्बीह – नसीहत, सीख, चेतावनी

निगरानी – देखरेख, निरीक्षण

जन्म सिद्ध – जन्म से ही प्राप्त

शालीनता – विनम्रता

मसलन – उदाहरण

जमात – कक्षा

इबारत – लेख

व्याख्या

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक प्रेमचंद कहते हैं कि उनके बड़े भाई साहब लेखक से पाँच साल बड़े थे, किंतु कक्षा में मात्र तीन दर्जे आगे शिक्षा के महत्वपूर्ण मामले में उनके बड़े भाई साहब को जल्दबाजी पसंद नहीं थी उनका मानना था कि जिस प्रकार आलीशान महल बिना मजबूत बुनियाद के खड़ी नहीं हो सकती, सुंदर नहीं बनाया जा सकता है ठीक उसी प्रकार यदि ढंग से शिक्षा की बुनियाद नहीं रखी गई तो शिक्षा अधूरा है इसलिए वे कभी–कभी एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने में उन्हें तीन साल भी लग जाते थे।

लेखक उम्र में छोटे थे लेखक की उम्र नौ साल थी और उनके बड़े भाई साहब की चौदह साल इस कम उम्र में भी वह लेखक को हमेशा सीख और नसीहत दिया करते साथ ही उन पर निगरानी रखते थे लेखक भी उनकी बात माना करते थे। बड़े होने के कारण वह खुद भी चाहते हैं कि वह कुछ ऐसा करें कि छोटे भाई के लिए वह एक प्रेरणा दायक हो। वह अपने पढ़ाई को सबसे प्रमुख मानते थे और

© JCERT not to be republished

अपनी पढ़ाई की नींव मजबूत करना चाहते थे इसलिए वह हर वक्त अपनी किताबें खोल कर रखते थे। मानो वह अपना बचपन भूल गए हो और अपने छोटे भाई को भी हमेशा पढ़ने को कहते थे।

बड़े भाई साहब दिन रात पढ़ाई में ध्यान लगाते और जब आराम करते तो कॉपी या किताब पर कुत्ते बिल्लियों की तस्वीर या शब्द, वाक्य लिखकर सुंदर अक्षरों में नकल किया करते। लेखक, भाई साहब की लिखी बात समझने की चेष्टा करते किंतु नहीं समझ पाते कि वे क्या लिखना चाहते हैं।

1. रिक्त स्थानों को भरें—:

क) मेरे भाई साहब मुझसे .... बड़े थे लेकिन तीन दर्जे आगे।

ख) वे स्वभाव से बड़े... थे।

ग) वे ....में थे मैं पांचवी में।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें—:

प्रश्न 2. बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में कितने बड़े थे और वे कौन—सी कक्षा में पढ़ते थे?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें—:

प्रश्न 3 —: लेखक के बड़े भाई स्वभाव से कैसे थे और वह दिमाग को आराम देने के लिए क्या किया करते थे?

गद्यांश की व्याख्या—2

मेरा जी पढ़ने में बिल्कुल न लगता था .... मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेलकूद का तिरस्कार ना कर सकता। (पृष्ठ संख्या 28——30)

शब्दार्थ —

कंकरिया — पत्थर के छोटे टुकड़े

प्राण सूख जाना — बुरी तरह डर जाना

अपराध — गलती

© JCERT not to be republished

मौन – चुप

सबक – सीखना

कसूर – गलती

खून जलाना – कड़ी मेहनत करना

निराशा – दुख

टाइम टेबल – समय सारणी

मंजूर – स्वीकार

जानलेवा – जान के लिए खतरा

अमल करना – पालन करना

दबे पाँव – बिना आवाज के

सामंजस्य – अनुकूल, औचित्य

कसूर – गलती, दोष

उपदेश – अच्छी बातें

निपुण – दक्ष, कुशल

सूक्ति – सुंदर कथन

बाण – वाण, तीर

स्कीम – योजना

अवहेलना – उपेक्षा करना

नसीहत – सीख

फजीहत – दुर्दशा

© JCERT not to be republished

सिफर – शून्य

घुड़कियाँ – धमकी भरी डांट

व्याख्या

लेखक का मन पढ़ाई में कम और खेलकूद में अधिक लगता था इसलिए मौका पाते ही बड़े भाई साहब से नजर बचाकर खेलने निकल पड़ते थे। परंतु जब वह खेल खत्म कर घर लौटते तो भाई साहब का गुस्से से लाल हुआ चेहरा देखते ही लेखक को बहुत डर लगता था जैसे ही उनका पहला सवाल होता– "कहां थे?" लेखक अपना अपराध स्वीकार कर लेते और बड़े भाई साहब लेखक को डांटते हुए नसीहत देने लगते कि इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे तो जिंदगी भर पढ़ते रहोगे, अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी खेल नहीं है, तुम बहुत सुस्त हो, तुम से पढ़ाई नहीं होती है। पढ़ाई करने के लिए दिन–रात आँख फोड़नी पड़ती है खून जलाना पड़ता है तब जाकर कुछ समझ में आता है। अगर तुम खेलकूद में ही अपनी जिंदगी को गँवाना चाहत हो तो घर वापस लौट जाओ और वहाँ पर मजे से गिल्ली डंडा खेलते रहना। कम से कम दादा की मेहनत की कमाई तो खराब नहीं होगी? ऐसी–ऐसी लताड़ सुनकर लेखक को रोना आ जाता भाई साहब की बातें सुनकर लेखक का हिम्मत साथ छोड़ देता कि जिस तरह बड़े भाई साहब पढ़ने में दिन–रात जुटे रहते थे उस तरह की हिम्मत लेखक में नहीं, इस निराशा में लेखक यह सोचने लगता क्यों ना घर चला जाऊँ, पढ़ाई मेरे बस की बात नहीं है इतनी मेहनत करने से तो चक्कर आ जाता है, किंतु कुछ समय बाद निराशा की जगह आशा की किरण दिखाई देती और वह फटाफट पढ़ने का टाइम टेबल बना लेते किंतु टाइम टेबल तो अवश्य बनाते थे लेकिन दूसरे ही दिन से उस पर अमल नहीं कर पाते और फिर से खेल–कूद में लग जाते। खेलकूद कर जब डर से लेखक कमरे में चुपचाप प्रवेश करते, भाई साहब को फटकार का अवसर मिल जाता किंतु डांट फटकार खाने के बावजूद लेखक खेलकूद से अपना मोह नहीं हटा पाते।

4. रिक्त स्थानों को भरें:–

क. यहाँ रात दिन आँखें फोड़नी पड़ती है और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह.................................. ....आती है।

ख.. इतने.......................................होते हैं मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है?

ग. अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मजे से खेलो।

घ. अपराध तो मैंने किया,...कौन सहे?

© JCERT not to be republished

इ. मगर ....बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें:–

प्रश्न 5. : कथानायक की रुचि किन कार्यों में थी?

प्रश्न 6. : बड़े भाई साहब छोटे भाई से क्या सवाल क्या पूछते थे?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें:–

प्रश्न 7. : बड़े भाई साहब ने अंग्रेजी विषय के बारे में लेखक को क्या बताया?

प्रश्न 8. : लेखक ने अपनी पढ़ाई का टाइम–टेबिल बनाने की बात सोच कर भी उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

प्रश्न 9. : आशय स्पष्ट करें : फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार घुड़कियाँ खाकर भी खेल–कूद का तिरस्कार न कर सकता।

उसका बड़ा भाई इन सब बातों के लिए उसे खूब डाँटता–डपटता था। उसे घुड़कियाँ देता था, तिरस्कार करता था। परंतु फिर भी वह खेल–कूद को नहीं छोड़ सकता था।

गद्यांश की व्याख्या–3

सालाना इम्तिहान हुआ————––अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था वह लुप्त हो गया गया और फिर चोरों का–सा जीवन कटने लगा। (पृष्ठ संख्या 30–33)

शब्दार्थ –

सालाना – एक साल का, वार्षिक

अव्वल – प्रथम, पहला

अभिमान – घमंड, गर्व

हेकड़ी – उग्रता अक्खड़पन

© JCERT not to be republished

स्वामी – राजा, मानस

कुकर्म – बुरे काम

दोयम – दूसरा

तेयम – तीसरा

चहारम – चौथा

पनाह – रहने की जगह शरण

प्रयोजन – उद्देश्य, मतलब

परीक्षक – परीक्षा लेनेवाला

कौड़ी – बीस का समूह

हर्फ – अक्षर

खुराफात – बखेड़ा उपद्रव

हिमाकत – दुशासन

किफायत – बचत कमी

दुरुपयोग – गलत उपयोग

फुलस्केप – कागज का एक आकार

व्याख्या

फिर सालाना परीक्षा हुई उसमें बड़े भाई साहब फेल हो गए, परंतु लेखक पास हो गए और दर्जे में भी प्रथम आए, उनके बीच अब सिर्फ दो कक्षाओं की दूरी रह गई थी। लेखक के मन में भाई से बदला लेने का विचार आया उन्हें खूब सुनाऊँ आया कि उनकी वह घोर तपस्या कहाँ गई? परंतु जब उन्होंने अपने बड़े भाई को दुखी और उदास देखा तो उन्होंने अपने इस विचार को त्याग दिया और खेलकूद में फिर व्यस्त हो गए। एक दिन तो छोटे भाई ने हद ही कर दी वह पूरा दिन खेलकूद में बिताकर आए तब बड़े भाई ने उन्हें जमकर फटकार लगाई कि अगर कक्षा में अव्वल आने की वजह से तुम्हें घमंड आ गया है तो एक बार बड़ी कक्षा में आओ तुम्हारे इस घमंड की अलजेब्रा, ज्योमेट्री और इतिहास के

© JCERT not to be republished

सामने क्या ही हस्ती रहेगी। यह सब विषय बड़े ही कठिन होते हैं। बड़े भाई साहब बताते हैं कि बड़ी कक्षा में बादशाहों के नाम याद रखने में कितनी परेशानी होती है और परीक्षा में 'समय की पाबंदी' जैसे निबंधों पर चार–चार पन्ने लिखने पड़ते हैं। परीक्षा में उत्तीर्ण करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। स्कूल जाने का समय निकट था नहीं तो लेखक को और बहुत कुछ सुनना पड़ता। लेखक को लगा कि जब पास होने के बाद इतना डांट, फटकार और तिरस्कार हो रहा है तो अगर मैं फेल हो जाता तो शायद मेरे प्राण ही ले लिए जाते, परंतु इतनी डाँट फटकार के बाद भी लेखक की रूचि खेलकूद से खत्म नहीं हुई थी। खेलकूद का कोई भी अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे।

10. रिक्त स्थानों को भरें–:

क. मैं खेलते कूदते दर्जे में .... आ गया।

ख. महज .... पास कर लेना कोई चीज नहीं,असल चीज है बुद्धि का विकास।

ग. सफल खिलाड़ी वह है जिसका कोई खाली ....ना जाए।

घ. इस रेखा पर यह लंबा गिरा दो तो लंब से .... दोगुना होगा।

ड. कौन नहीं जानता कि ....बहुत अच्छी होती है।

च. लाख फेल हो गया हूं लेकिन तुमसे बड़ा हूं, संसार का मुझे तुमसे ज्यादा .... है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें:–

प्रश्न 11. : परीक्षा में सफल होने पर लेखक के मन में क्या विचार आया?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें:–

प्रश्न 12. : समय की पाबंदी से जीवन में क्या आता है?

प्रश्न 13. : भाई साहब ने अपने दर्जे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा, उससे लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

प्रश्न 14. : निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए:–

इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज है बुद्धि का विकास?

© JCERT not to be republished

गद्यांश की व्याख्या–4

फिर सालाना इम्तहान हुआ––––मैं पीछे–पीछे दौड़ रहा था। (पृष्ठ संख्या 33-37)

शब्दार्थ –

कुटिल – टेढ़ा, बुरा, दुष्ट

सहिष्णुता – सहने की शक्ति

अदब – आदर, सम्मान

आकाशवाणी – आकाश की ओर जाने वाला

विरक्त – बिना चाह के उदास

पोजीशन – स्थान, स्थिति

नायाब – अनोखा

तहसीलदार – कर वसूल करने वाला

तजुर्बा – अनुभव

बदहवास – व्याकुल

मरज – रोग

मोहताज – आश्रित, अभाववाला

नेकनामी – ख्याति, अच्छा नाम

कुटुंब – परिवार, रिश्तेदार

गुरुर – घमंड

बेराह – राह से अलग, कुमार्ग

नतमस्तक – सिर झुका कर

फरमा – ढाँचा

© JCERT not to be republished

व्याख्या

फिर से सालाना परीक्षा हुआ और लेखक पास हो गया और बड़े भाई साहब फिर फेल हो गए। लेखक ने अत्यधिक परिश्रम नहीं किया था परंतु पास होने पर उसे खुद आश्चर्य हो रहा था कि वह अपने कक्षा में अव्वल कैसे आ गए? जबकि बड़े भाई साहब ने कठिन मेहनत कर परीक्षा की तैयारी की थी, दिन–रात जमकर मेहनत की फिर भी ना जाने वह कैसे फेल हो गए? परिणाम सुनकर बड़े भाई साहब रोने लगे उनके साथ लेखक भी रोने लगे और अव्वल आने की खुशी उनकी आधी हो गई।

बड़े भाई साहब लेखक को डाँटना भी छोड़ दिया लेखक के मन में यह बैठ गया कि वे पढ़े या ना पढ़े पास तो अवश्य हो जाएँगें इस तरह खेलकूद में उनका मन और रमने लगा।

एक शाम लेखक हॉस्टल के बाहर एक पतंग के पीछे भागा जा रहा था तभी उनका सामना बड़े भाई साहब से हो गई। लेखक को पतंग के पीछे भागते हुए देखा, उन्होंने उसका हाथ पकड़ लिया और गुस्से से कहा कि तुम अब आठवीं कक्षा में आ गए हो और आठवीं में आने के बाद भी तुम यह सब कर रहे हो। एक जमाने में आठवीं कक्षा पास करके कई लोग तहसीलदार हो जाते थे, कई लीडर और कई पत्रकार बन जाते थे और तुम इस पद को महत्त्व ही नहीं देते।

बड़े भाई साहब, लेखक को तजुर्बे का महत्व समझाते हुए कहने लगे कि तुम भले ही मुझसे कक्षा में आगे निकल जाओ परंतु इस जमाने में तजुर्बा तुमसे ज्यादा मेरे पास रहेगा। अम्मा दादा का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि भले ही तुम पढ़ लिखकर कितने बड़े ही अफसर बन जाओ परंतु तुम उनके तजुर्बे के बराबरी कभी भी नहीं कर पाओगे। वे बीमारी से लेकर के घर के सभी कामों में हमसे ज्यादा सफल रहेंगे। ये सब बातें सुनकर लेखक बड़े भाई के सामने नतमस्तक हो जाता है और अपनी गलती का एहसास होता है। लेखक को यह भी एहसास होता है कि बड़े भाई साहब के कारण ही वे हर दर्जे में अव्वल आते रहे हैं यह सब बड़े भाई की नसीहत और फटकार की वजह से ही है अगर बड़े भाई साहब नहीं डांटते तो शायद लेखक पास भी नहीं हो पाते और आज वह भी फेल होते।

इसी बीच एक कटी कनकौआ (पतंग) उनके ऊपर से लहराती हुई जा रही थी। लड़कों की एक टोली पीछे–पीछे दौड़ा चला जा रहा था, भाई साहब लंबे थे उछल कर एक डोर पकड़ लिया और हॉस्टल की तरफ दौड़ पड़े पीछे–पीछे लेखक भी दौड़ने लगे।

15. रिक्त स्थानों को भरें–:

क. ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर......................................और भाई साहब फिर फेल हो गए।

ख. उन पर......................................वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा।

© JCERT not to be republished

ग. मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल.......................................का अंतर और रह गया

घ. तुम.......................................इसमें शक नहीं

ड. अम्मा और दादा को हमें समझाने और सुधारने का.......................................रहेगा उन्हें दुनिया का हमसे ज्यादा तजरबा है और रहेगा।

लिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें:–

प्रश्न 16. : परीक्षा में पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

प्रश्न 17. : पहले लोग किस दर्जे को पास करके तहसीलदार बन जाते थे?

प्रश्न 18. : बड़े भाई साहब का भी क्या मन करता था ?

उत्तर 18. : बड़े भाई साहब को भी लड़कों के साथ खेलने का मन करता था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें :–

प्रश्न 18. : बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

प्रश्न 19. : छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

प्रश्न 20. : बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए?

प्रश्न 21. : निम्नलिखित कथन के आशय स्पष्ट करें–:

आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला जा रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्करण ग्रहण करने जा रही हो?

22. बहु वैकल्पिक प्रश्न के सही उत्तर लिखिए–:

क– 'बड़े भाई साहब' उनकी अन्य रचनाओं से किस दृष्टि से उच्च कोटि की रचना है?

(A) भाषा की

(B) साहित्य की

© JCERT not to be republished

(C) कहानी की

(D) शब्दों के चयन की

ख– बड़े भाई साहिब कहानी किस शैली मे लिखी गयी है?

(A) व्यंग्यात्मक

(B) करुणामयी

(C) आत्मकथात्मक

(D) सभी

ग– इस कहानी मे किन शब्दो का सुन्दर मिश्रण है?

(A) तत्सम एवं तदभव

(B) देशज एवं विदेशी

(C) मुहावरेदार

D) सभी

घ – लेखक के भाई साहब लेखक से कितने साल बड़े थे?

(A) 3 साल

(B) 5 साल

(C) 6 साल

(D) 8 साल

ङ. भाई साहब लेखक से कितनी कक्षा आगे थे?

(A) दो कक्षा

(B) तीन कक्षा

© JCERT not to be republished

(C) चार कक्षा

(D) सात

च–भाई साहब किस मामले में जल्दबाजी नहीं करते थे?

(A) खेल कूद में

(B) लडने मे

(C) शिक्षा के मामले मे

(D) निर्णय लेने के बारे में

छ– बड़े भाई वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध क्यों हैं?

(A) खेल कूद पर जोर देती है

(B) किताबी कीड़ा बनाती है और वास्तविकता से दूर है

(C) बहुत लाभदायक नहीं है

(D) सभी

ज– बड़े भाई में क्या गुण थे?

(A) गंभीर प्रवृति के थे

(B) छोटे भाई के हितैषी थे

(C) वाक् कला में निपुण थे

(D) सभी

झ – लेखक को कौन–सा काम बहुत कठिन और असंभव जान पड़ता था?

(A) दिन–रात खेलना–कूदना

(B) दिन–रात पढ़ाई करना

© JCERT not to be republished

(C) खाना बनाना

(D) उपर्युक्त सभी

पाठ से–: प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. : बड़े भाई साहब अपने दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

उत्तर : बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे कभी–कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस – बीस बार लिख डालते कभी एक शेर को बार–बार सुंदर अक्षरों में नकल करते कभी ऐसी शब्द रचना करते जिसमें ना कोई अर्थ होता ना कोई सामंजस्य, कभी आदमी का चेहरा बनाकर रखते।

प्रश्न 2. : लेखक के भाई ने लेखक के सामने पढ़ाई का कैसा चित्र खींचा?

उत्तर : भाई साहब शिक्षा को जीवन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानते थे। ऐसे महत्त्वपूर्ण मामलों में वे जल्दबाजी करने के पक्षधर नहीं थे। उनका मानना था कि जिस प्रकार एक मजबूत मकान बनाने के लिए मजबूत नींव की जरुरत होती है, उसी प्रकार शिक्षा की नींव मजबूत बनाने के लिए वे एक–एक कक्षा में दो–दो, तीन साल लगाते थे।

प्रश्न 3 : 'समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती दुनिया देखने से आती है।'– इस कथन को किसी एक उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।

उत्तर : लेखक के बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ अनुभव रुपी ज्ञान से आती है, उनके अनुसार पुस्तकीय ज्ञान से हर कक्षा पास करके अगली कक्षा में प्रवेश मिलता है, लेकिन यह पुस्तकीय ज्ञान अनुभव में उतारे बिना अधूरा है। दुनिया को देखने, परखने तथा बुजुर्गों के जीवन से हमें अनुभव रुपी ज्ञान को प्राप्त करना आवश्यक है, क्योंकि यह ज्ञान हर विपरीत परिस्थिति में भी समस्या का समाधान करने मे सहायक होता है। इसलिए उनके अनुसार जीवन का अनुभव पढ़ाई से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, और हमारी समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती बल्कि अनुभव के दायरे से गुजर कर दुनिया देखने से आती है।

उदाहरण के तौर पर जब हम अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों को देखते हैं तब केवल किताबी ज्ञान के आधार पर हम उसका समाधान नहीं ढूंढ पाते इसके लिए हमें स्वविवेक से स्वयं निर्णय लेना पड़ता है या फिर जो हमारे बड़े–बुजुर्ग के बताएँ सही मार्ग से ही हमें

© JCERT not to be republished

सच्चा ज्ञान मिलता है जिससे हम व्यवहारिक दृष्टिकोण से समस्या का समाधान ढूंढ पाते हैं।

(आप अपने अनुभव के आधार पर कोई भी उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं।)

प्रश्न 4 : लेखक के बड़े भाई ने परीक्षा में सफलता के लिए क्या–क्या किया? आप परीक्षा की तैयारी किस प्रकार करते हैं?

उत्तर : लेखक के बड़े भाई ने परीक्षा में सफलता के लिए जी जान परिश्रम किया कोर्स में पढ़ाए गए एक–एक शब्द को रट गए सुबह चार बजे भोर से उधर छह से नौ बजे तक स्कूल जाने के पहले शाम से दस बजे रात तक केवल पढ़ते रहते थे पढ़ाई के कारण उनके चेहरे का रंग भी उतर गया।

(आप परीक्षा की तैयारी कैसे करते हैं, लिखें)

प्रश्न 5 : 'बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पाएदार बने!'––इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति का आशय है कि जिस प्रकार मकान को मजबूत तथा टिकाऊ बनाने के लिए उसकी नींव को गहरा तथा ठोस बनाया जाता है, ठीक उसी प्रकार से जीवन की नींव को मजबूत बनाने के लिए शिक्षा रुपी भवन की नींव भी बहुत मजबूत होनी चाहिए, क्योंकि इसके बिना जीवन रुपी मकान पायदार नहीं बन सकता है।

भाषा संदर्भ

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए–

(क) यहां रात दिन आंखें फोड़ने पड़ती है और खून जलाना पड़ता है। इस पंक्ति में 'आँख फोड़ना' और 'खून जलाना' मुहावरों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा सुंदर बनती है।

आप पाठ में आए मुहावरों को चुनकर वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए।

प्राण सूखना : (डर लगना) – साँप को देखते ही श्याम के प्राण सूख गए।

हँसी खेल होना : (छोटी मोटी बात होना) – मोहन कठिन से कठिन कार्य को भी हँसी खेल में कर देता है।

© JCERT not to be republished

आँखें फोड़नाः (बड़े ध्यान से पढ़ना) – परीक्षा नजदीक आने पर सभी बच्चे आंखें फोड़ फोड़कर पढ़ने लगे।

गाढ़ी कमाई : (मेहनत की कमाई) – श्याम ने अपनी गाढ़ी कमाई से अपने पुत्र को डॉक्टर बना दिया।

जिगर के टुकड़े टुकड़े होना : (हृदय पर भारी आघात लगना) – रवि ने विश्वासघात करके किशन के जिगर को टुकड़े–टुकड़े कर दिए।

हिम्मत टूटना : (साहस समाप्त होना) – व्यापार में असफलता प्राप्त होने पर अमर की हिम्मत टूट गई।

जी–तोड़ मेहनत करना : (अत्यधिक परिश्रम करना) – सोहन परीक्षा में प्रथम आने के लिए जी–तोड़ मेहनत कर रहा है।

2. खेलकूद में द्वंद्व समास है। इन दोनों शब्दों के बीच लगे चिन्ह को सामासिक चिन्ह (–) कहते हैं। इस चिन्ह से 'और' का संकेत मिलता है।

जैसे – खेल–कूद = खेल और कूद।

इस प्रकार के तीन और उदाहरण खोजकर लिखिए।

क. आगे–पीछे = आगे और पीछे

ख. हँसी–खेल = हँसी और खेल

ग. मेले – तमाशे = मेले और तमाशे

3. इन वाक्यों को पढ़िए–

क. सड़क के किनारे किनारे पेड़ लगे हैं।

ख. आज दूर–दूर तक वर्षा हो सकती है।

इन वाक्यों में किनारे–किनारे और दूर–दूर पुनरुक्त शब्द है।

'किनारे–किनारे' का अर्थ है – किनारे से लगा हुआ, और दूर–दूर का अर्थ है – बहुत दूर तक। आप पाठ में ऐसे पाँच शब्दों का चयन कर वाक्य में प्रयोग करें।

कभी–कभी = माताजी कभी–कभी गुस्से में आ जाती है।

© JCERT not to be republished

बार–बार = राम बार–बार ऑफिस के चक्कर लगाता है।

बड़े–बड़े = सोहन बड़े–बड़े काम पलक झपकते कर देता है।

ऐसी–ऐसी = रानी ऐसी ऐसी बातें कहती है, जो संभव नहीं

टुकड़े–टुकड़े = मोहन ने लकड़ी के टुकड़े–टुकड़े कर दिए।

अक्षर–अक्षर = एक एक अक्षर के अर्थ अनमोल हैं।

एक–एक = शिक्षक ने एक–एक बच्चे को मिठाई दिए।

पैसे–पैसे = अमरकांत एक–एक पैसे के लिए कड़ी मेहनत करता है।

पीछे–पीछे = शिक्षक के पीछे–पीछे सभी बच्चे अनुशासन के साथ चल रहे थे।

हलके–हलके = हवा के हल्के हलके झोंके में रामू को नींद आ गई।

(नोटः आप उपरोक्त शब्दों का वाक्य में प्रयोग स्वयं वाक्य बनाकर भी कर सकते हैं।)

4. "भाई साहब का वह रौद्र रुप देखकर प्राण सूख जाते" हिंदी में कुछ ऐसे शब्द है जिनका प्रयोग हमेशा बहुवचन के रुप में ही होता है जैसा कि ऊपर के उदाहरण में देखा जा सकता है यहां प्राण शब्द के साथ बहुवचन क्रिया का प्रयोग हुआ है निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्य में कीजिए–

दर्शन = शिष्य, गुरु के दर्शन पाकर धन्य हो गए।

आंसू = मोहन की बात सुनकर सभी के आंखों से आंसू निकल गए।

हस्ताक्षर = प्रधानाध्यापक ने सूचना पुस्तिका में हस्ताक्षर कर दिए।

होश = प्रश्न पत्र के मिलते ही रमेश के होश उड़ गए।

दाम = दुकानदार से रमेश ने पूछा– "कुर्ते के दाम कितने हैं।"

बाल = मोहन के दादाजी के सभी बाल पक गए।

© JCERT not to be republished

5. रिक्त स्थानों को भरें–:

नीचे दिए वाक्यों में कौन–सी क्रिया है – सकर्मक या अकर्मक? लिखिए –

(क) उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया। ....

उत्तरः उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया। सकर्मक

(ख) फिर चोरों–सा जीवन कटने लगा। ....

उत्तरः फिर चोरों–सा जीवन कटने लगा। अकर्मक

(ग) शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। ....

उत्तरः शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। सकर्मक

(घ) मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। ....

उत्तरः मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। सकर्मक

(ङ) 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो। ....

उत्तरः 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो। सकर्मक

(च) मैं पीछे–पीछे दौड़ रहा था। ....

उत्तरः मैं पीछे–पीछे दौड़ रहा था। अकर्मक

व्याख्या के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर–:

प्रश्न 1.

उत्तरः–क) 5 साल

ख) अध्ययनशील

ग) नवी जमात

उत्तर 2. : बड़े भाई साहब लेखक से उम्र में 5 साल बड़े थे। वे नवीं कक्षा में पढ़ते थे।

© JCERT not to be republished

उत्तर 3 : बड़े भाई साहब स्वभाव से अध्ययनशील थे और दिमाग को आराम देने के लिए कॉपी या किताब पर कुत्ते बिल्लियों की तस्वीर या शब्द, वाक्य लिखकर सुंदर अक्षरों में नकल किया करते थे।

उत्तर – 4

क) विद्या

ख) मेले–तमाशे

ग) गुल्ली–डंडा

घ) लताड़

ड) टाइम–टेबिल

उत्तर 5 : कथा नायक की रुचि खेल–कूद में अधिक थी।

उत्तर 6 : बड़े भाई छोटे भाई से हर समय एक ही सवाल पूछते थे–'कहाँ थे?'

उत्तर 7 : बड़े भाई साहब ने अंग्रेजी विषय के बारे में बताया कि इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो जिंदगी भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ न आएगा। अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी खेल नहीं है कि जो चाहे पढ़ ले, नहीं तो ऐरा–गैरा नत्थू खैरा, सभी अंग्रेजी के विद्वान हो जाते।

उत्तर 8 : पढ़ाई का टाइम–टेबिल बनाते समय उसने यह सोचा कि टाइम–टेबिल बना लेना एक बात है और बनाए गए टाइम–टेबिल पर अमल करना दूसरी बात है। लेखक ने अधिक मन लगाकर पढ़ने का निश्चय कर टाइम–टेबिल बनाया, जिसमें खेलकूद के लिए कोई स्थान नही था किन्तु मैदान की हरियाली, फुटबॉल की उछल–कूद, कबड्डी के दाँव–घात, वॉलीबॉल कि वह तेजी और फुर्ती लेखक को अज्ञात और अनिवार्य रुप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही वह सब कुछ भूल जाता।

उत्तर 9. : लेखक को खेलकूद में खूब मन लगता था। जिस प्रकार विविध संकटों में फँसकर भी मनुष्य मोहमाया में बँधा रहता है, उसी प्रकार लेखक डाँट–फटकार सहकर भी खेल–कूद के आकर्षण से बँधा रहता था।

उत्तर 10.: (क) अव्वल (ख) इम्तहान (ग) निशाना (घ) आधार (ड.) समय की पाबंदी (च) अनुभव

उत्तर 11.: परीक्षा में सफल होने पर लेखक के मन में विचार आया कि भाई साहब फेल हो गए हैं इसलिए उन्हें कह दें कि ''कहाँ गई आपकी घोर तपस्या?''

© JCERT not to be republished

उत्तर 12.: समय की पाबंदी से आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके कारोबार में उन्नति होती है।

उत्तर 13.: भाई साहब ने अपने दर्जे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था, उससे लेखक पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, पुस्तकों में उनकी अरुचि ज्यों की त्यों बनी रही, खेलकूद का कोई अवसर हाथ से ना जाने देते पढते भी बहुत कम थे इतना कि रोज का टास्क पूरा हो जाए और दर्जे में जलील ना होना पड़े।

उत्तर 14.: इस पंक्ति का आशय है कि इम्तिहान में पास हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि इम्तिहान तो रटकर भी पास किया जा सकता है, किन्तु बिना समझ और अनुभव के बुद्धि का विकास नहीं हो सकता।

उत्तर 15.: (क) पास हुआ (ख) दया आई (ग) एक दर्जे (घ) जहीन हो (ड) अधिकार हमेशा

उत्तर 16.: सालाना परीक्षा में पास होने पर छोटा भाई अहंकारी हो गया।

उत्तर 17.: लोग आठवीं दर्जे को पास करके तहसीलदार बन जाते थे।

उत्तर 18.: बड़े भाई साहब बड़े होने के नाते यही कोशिश करते थे कि वे जो कुछ भी करें, वह छोटे भाई के लिए एक उदाहरण बने क्योंकि उन्हें ऐसा लगता था यदि वे स्वयं अनुशासित नहीं रहेंगे अपने कर्तव्य और नैतिकता का पालन नहीं करेंगे तो उनके छोटे भाई उसका अनुपालन कैसे करेंगे? इसलिए बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएं दबानी पड़ती थी।

उत्तर 19.: निम्नलिखित कारणों से छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई क्योंकि बड़े भाई साहब

- खेलकूद के बदले पढ़ने की सलाह देते थे।
- अभिमान न करने की सीख देते थे।
- अपने भाई के लिए अपने मन की सभी इच्छाओं को दबाकर छोटे भाई के भविष्य के लिए प्रयासरत रहते थे।

उत्तर 20.: बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–:

- अपने छोटे भाई के भविष्य की चिंता के लिए अपनी इच्छाओं को दबाकर रखते थे।
- बड़ा भाई बड़ा ही परिश्रमी था। वह दिन–रात पढ़ाई में ही जुटे रहते थे।

© JCERT not to be republished

- खेल–कूद, क्रिकेट मैच आदि में उसकी कोई रुचि नहीं थी।
- वह आदर्शवादी बनकर छोटे भाई के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता है।
- बड़े भाई साहब का मानना था कि समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती दुनिया देखने से आती है।
- किसी भी कार्य को करने के लिए चाहे वह पढ़ाई ही क्यों ना हो ,बुनियाद का मजबूत होना जरुरी है इसलिए एक–दो साल एक ही कक्षा में फेल हो जाने के बावजूद भी पढ़ाई में लीन रहते थे।

उत्तर 21.: लेखक पतंग लूटने के लिए आकाश की ओर देखता हुआ दौड़ा जा रहा था। उसकी आँखें आकाश में उड़ने वाली पतंग की ओर थीं। उसे पतंग आकाश में उड़ने वाली दिव्य आत्मा जैसी मनोरम प्रतीत हो रही थी। वह कटी हुई पतंग मंद गति से झूमती हुई नीचे की ओर आ रही थी। आशय यह है कि कटी हुई पतंग धीरे–धीरे धरती की ओर गिर रही थी। लेखक को कटी पतंग इतनी अच्छी लग रही थी मानो वह कोई आत्मा हो जो स्वर्ग से उतरकर बड़े भारी मन से धरती पर उतर रही हो।

22. बहु वैकल्पिक प्रश्न के सही उत्तर लिखिए –:

वर

क उत्तरः। – भाषा की

ख उत्तरः C – आत्मकथात्मक

ग उत्तरः D – सभी

घ उत्तरः B – 5 साल

ड. उत्तरः B – तीन कक्षा

च उत्तरः C – शिक्षा के मामले में

छ उत्तरः B – किताबी कीड़ा बनाती है और वास्तविकता से दूर है।

ज उत्तरः D – सभी

झ उत्तरः B – दिन–रात पढ़ाई करना

© JCERT not to be republished